मृत देह की स्टेम कोशिकाओं से इलाज

फिलहाल जो टेक्नॉलॉजी उपलब्ध है उसकी मदद से मृत देह के कुछ अंगों का उपयोग प्रत्यारोपण के लिए किया जा सकता है। अब नए अनुसंधान से यह आशा जगी है कि मृत देह से स्टेम कोशिकाएं प्राप्त करके उनका भी प्रत्यारोपण किया जा सकेगा।

मनुष्य की अस्थि मज्जा में मिसेन्काइमल स्टेम कोशिकाएं (एमएससी) पाई जाती हैं। इन एमएससी में क्षमता होती है कि ये अस्थि, उपास्थि व अन्य किस्म के ऊतकों का निर्माण कर सकती हैं। महत्त्वपूर्ण बात है कि एमएससी का प्रत्यारोपण किया जा सकता है और इन्हें जहां प्रत्यारोपित किया जाता है, उसी के अनुसार ये नई कोशिकाओं का निर्माण करने लगती हैं। इसके अलावा इन्हें प्राप्तकर्ता का प्रतिरक्षा तंत्र अस्वीकार भी नहीं करता। इन सब वजहों से एमएससी उपचार की दृष्टि से बहुत अहमियत रखती हैं।

मगर एक दिक्कत रही है। उपचार के लिए बड़ी संख्या में एमएससी की ज़रूरत होती है और किसी जीवित दानदाता से इतनी बड़ी संख्या में कोशिकाएं मिलना मुश्किल होता है। तो, फ्लोरिडा के मियामी विश्वविद्यालय के गिआनलुका डी'अपितो और उनके साथियों ने सोचा कि क्या मृत देह इसका जवाब हो सकती है।

इस सवाल का जवाब पाने के लिए डी'अपितो के दल ने दो मृत देहों की उंगलियों की हड्डियां पांच दिन तक संभालकर रखीं। इसके बाद इन हड्डियों की अस्थि मज्जा में से एमएससी निकाली गईं और उन्हें एक तश्तरी में पनपने दिया गया। पांच सप्ताह बाद डी'अपितो का दल इन कोशिकाओं को उपास्थि कोशिकाओं और वसा कोशिकाओं में तबदील करने में कामयाब रहा। उन्होंने अपने शोध के परिणाम हाल ही में फ्लोरिडा में आयोजित विश्व स्टेम कोशिका सम्मेलन में प्रस्तुत किए।

अभी इन कोशिकाओं को कृत्रिम माध्यम में ही पनपाया गया है। एक शंका यह व्यक्त की गई है कि शायद ये पूरी तरह स्वस्थ न हों क्योंकि आसपास की कोशिकाओं की मृत्यु का असर इन पर पड़े बिना नहीं रहेगा। वैसे ताज़ा मृत देह के कॉर्निया की स्टेम कोशिकाओं का उपयोग प्रत्यारोपण में सफलतापूर्वक किया जा चुका है।

मृत देह से प्राप्त स्टेम कोशिकाओं में एक दिक्कत और भी है। आम तौर पर उपचार के लिए सलाह दी जाती है कि एक ही व्यक्ति की स्टेम कोशिकाओं का उपयोग किया जाए। यदि जीवित व्यक्ति से कोशिकाएं ली जाती हैं और बाद में और कोशिकाओं की ज़रूरत पड़ती है तो उस दानदाता को फिर से संपर्क किया जा सकता है। मगर यदि मृत देह से कोशिकाएं ली गईं तो बाद में ऐसी कोई संभावना नहीं रहेगी। अलबत्ता, यह उपचार की नई संभावनाएं तो उजागर करता ही है। ***(स्रोत फीचर्स)***